कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी. ए. स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट II

1 कुकुरमुत्ता — सूर्यकांत त्रिपाठी संकलित (राग-विराग)

2

आया मौसिम, खिला फारस का गुलाब,
बाग पर उसका पड़ा था रोबोदाब;
वहीं गंदे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठे उस ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता
" अबे, सुन बे गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपीटलिस्ट
कितनों को तूने बनाया गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम
हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर पर रख कर न पीछे भगा
और की जानिब मैदान यह छोड़कर
तबेले को टट्टू जैसे तोड़ कर,
शाहों, राजों अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।
वरना क्या तेरी हस्ती है, पोच तू
कांटों से भरा है यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर कांटा हुई होती कभी।
रोज पड़ता रहा पानी,
तू हरामी खानदानी।
चाहिए तुझको सदा मेहरुन्निसा
जो निकाले इत्र रु, ऐसी दिशा
बहाकर ले चले लोगों को नहीं
कोई किनारा

(2)

जहाँ अपना नहीं कोई भी सहारा
ख्वाब में ऐसा चमकता हो सितारा।
पेट में डंड पेले हों चूहे जबाँ पर
लफ्ज प्यारा।

प्रसंग — कवि ने उपर्युक्त अंश में व्यंग्यात्मकता का प्रयोग किया है वह कुकुरमुत्ता के माध्यम से गुलाब के अभिजात्य के लिए ललकारता शुरू करता है।

व्याख्या — जब पुष्पों के पुष्पित होने का समय आया तो फारस से आयातित गुलाब के पुष्प खिलने लगे। खिला हुआ गुलाब के फूल का सौन्दर्य संपूर्ण उपवन पर था। गुलाब के पुष्प के समीप गंदे स्थान में उगे कुकुरमुत्ते ने अपने पहाड़ी के समान ऊँचे हुए मस्तिष्क से ऐंठ कर कहा "अरे गुलाब! सुन, तू ये मत भूल की जो तूने सौन्दर्य, सुगंध रंग रूप पाया है वह तूने खाद का खून चूसकर प्राप्त किया है। अर्थात् पूंजीवाद वर्ग के प्रतीक गुलाब की संरचना में निर्माण में खाद अर्थात् निम्नवर्गीय समाज का खून पी-पीकर शोषण किया है अरे पूंजीवादी तू इस डाल पर बैठा रहा है। तुम ये बतलाओ कि अपनी शोषक प्रवृति से कितने लोगों को गुलाम बनाया है। तूने अपनी देख रेख के लिए माली को रखा है जिसमें तेरी सेवा में सर्दी-गर्मी में सेवा की

(3)

ककुरमुत्ता कहता है कि तू तो मुसीबत की जड़ है कि जिसके हाथों में तू पड़ जाता है वह इस तरह भागता है जैसे मैदान छोड़कर सिपाही भागती है तुझे पाने वाला उसी प्रकार दुखी होता है जिस प्रकार अस्तबल की रस्सी तोड़कर घोड़ा भाग जाता है। यहाँ कवि का आशय है कि धनवानों के प्रभाव से उनसे त्रस्त होकर गरीब व्यक्ति उनसे दूर भागता है। वह आजीविका विहीन हो जाता है, इसी प्रकार गंधमय गुलाब के कांटो को देखकर लोग उससे दूर भागते हैं। तू तो शहंशाहों, राजाओं तथा अमीरों वर्गों के लोगों का प्रिय पुष्प रहा है इसलिए तू अन्य पुष्पों को साधारण समझ उनसे अलग रहा है विशिष्ट बना रहा है। किन्तु अगर तू इनका प्रिय न होता तो वास्तव में तेरी औकात ही क्या है तेरा तो अस्तित्व भी संभव नहीं है क्योंकि तू आत्मनिर्भर न होने के कारण कायर है निर्बल है। काँटो के अलावा तेरी पूँजी और है क्या, तूने कभी इस सत्य पर विचार किया है अभी-अभी जो तेरी यह कली चटक कर विकसित होने लगी है यह तो कभी सूखकर तेरे काँटों संयुक्त हो चुकी होती, अगर पानी के द्वारा पोषित नहीं किया जाता। लेकिन तू अभिमानी स्वाभिमानी यह बात कैसे समझेगा। क्योंकि तू जड़ से नहीं लगता, तेरी तो कलमें लगती हैं।

Scanned with CamScanner

(4)

इसलिए तू सदैव पितृकुल के बगैर रहा। तेरे अंधे अहंकार का यह हाल है कि तुझे प्रतिदिन नई औरत चाहिए जो तेरे चारों तरफ घूमें तुझसे प्रेम करें और तुमसे धन और स्नेह प्राप्त करती रहे। अर्थात तू हमेशा विलास मैं व्यस्त रहा है। यह वास्तव में ऐसी दिशा है जिनसे लोगों को पतन की लहरों में बहाया है। ऐसी लहरों के लिए कोई किनारा नहीं होता है ऐसी हालत में अपना भी कोई नहीं होता और न ही किसी का सहारा ही मिल पाता है। ये लोग अपने अभिजात्य के प्रदर्शन के लिए ऊँची-ऊँची बातें करते हैं चाहे इन्हें खाने के लिए ठीक से भोजन भी मिले या नहीं क्षुधातुर होने के कारण इनके पेट में चूहे कूद रहे होते हैं।

विशेष —

(1) कवि ने पूंजीपति अभिजात्य पर कटु व्यंग्य किया है।

(2) विद्वान इसे साम्यवादी विचारधारा से प्रेरित मानते हैं।

(3) भाषा के प्रयोग में उर्दू-फारसी के अतिरिक्त ठेठ देशज शब्दों का प्रयोग।

(4) अशिष्ट, हरामी केपीटलिस्ट, पोच जैसे शब्दों से फटकारने वाली प्रवृत्ति।

(5) छायावादी से भिन्न भाषा प्रयोग।

Scanned with CamScanner